www.pdgroup.in
E-mail : publisher@pdgroup.in

सामान्य ज्ञान दर्पण

वर्ष 37 तृतीय अंक
अक्टूबर 2023

इस अंक में...

7 सम्पादकीय
9 समसामयिक सामान्य ज्ञान
13 आर्थिक परिदृश्य
19 राष्ट्रीय परिदृश्य
24 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

28 क्रीड़ा जगत्
31 विज्ञान समाचार
33 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

युवा प्रतिभा

34 'द इंस्टीट्यूट ऑफ बैंकिंग पर्सोनेल सेलेक्शन' द्वारा आयोजित परीक्षा–2023 में प्रोबेशनरी ऑफीसर/मैनेजमेण्ट ट्रेनी के पद पर चयनित —वैष्णवी
35 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
38 सारभूत तत्व कोष

लेख

41 **आर्थिक एवं वाणिज्यिक लेख**—बहुपक्षीय विकास बैंकों का सशक्तीकरण आवश्यक
43 **राजनीतिक लेख**—दबाव समूह और आन्दोलन
44 **वैश्विक तापन लेख**—ग्लोबल वार्मिंग से बढ़ रही वज्रपात की घटनाएं
46 **ऐतिहासिक लेख**—महाभारत काल के प्रमुख स्थल
48 **मानवाधिकार लेख**—मानवता को शर्मसार करती मानव तस्करी
49 **अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध लेख**—भारत-फ्रांस सम्बन्ध
51 **संचार लेख**—जनसंचार का समाजशास्त्रीय सिद्धान्त: एजेंडा सेटिंग
53 **ऊर्जा लेख**—भारत में ऊर्जा संक्रमण में राज्यों की भूमिका
55 **अंतरिक्ष लेख**— अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी क्षेत्र की बढ़ती साझेदारी
56 **कृषि लेख**—रासायनिक कीटनाशकों का बेतहाशा इस्तेमाल चिंताजनक
57 कॅरियर सलाह

हल प्रश्न-पत्र

60 एस.एस.सी. केन्द्रीय सशस्त्र पुलिस बल एवं दिल्ली पुलिस सब-इंस्पेक्टर परीक्षा, 2022
78 एस.एस.सी. संयुक्त हायर सेकण्डरी (10+2) लेवल परीक्षा, 2021 (चरण-I)
87 उत्तराखण्ड बी.एड. प्रवेश परीक्षा, 2022
108 हरियाणा शिक्षक पात्रता परीक्षा, 2022

मॉडल हल प्रश्न

115 आगामी आई. बी.पी.एस. द्वारा आयोजित बैंक लिपिकीय संवर्ग प्रारम्भिक परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न

विविध/सामान्य

124 वर्षांत समीक्षा : 2022– विद्युत् मंत्रालय
127 ज्ञान वृद्धि कीजिए
129 रोजगार समाचार

सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **–सम्पादक**

सम्पादकीय

सृजन-वृत्ति को विकसित कीजिए

"इसमें कोई सन्देह नहीं कि सृजनात्मकता सभी संसाधनों में सर्वोत्तम मानवीय संसाधन है, सृजनात्मकता के बिना कोई प्रगति नहीं होगी और हम सदैव एक ही पैटर्न बार-बार अपनाते रहेंगे."

– एडवर्ड डी बोनो

जगत् की सृष्टि का कारण बुद्धिगम्य नहीं है. केवल यह कहकर संतोष करना पड़ता है कि मूल इकाई, ब्रह्म के चित्त में क्षोभ हुआ– एकोऽहम बहुस्याम–मैं एक अनेक हो जाऊँ और जगत् अथवा सृष्टि की उत्पत्ति हो गई, परन्तु ब्रह्म के निर्विकार निश्चल हृदय में उक्त इच्छा रूपी क्षोभ क्यों और क्यों कर उत्पन्न हुआ? इस प्रश्न का उत्तर केवल इस प्रकार दिया जा सकता है कि **गति विश्व का नियम एवं उसकी अनिवार्य प्रक्रिया है तथा सृजन जीवन की आवश्यकता है.**

लोक-व्यवहार में पग-पग पर रचनात्मक अथवा सृजनात्मक विचार, वचन एवं कर्म की माँग होती है. यहाँ तक कि विरोधमूलक आलोचना भी रचनात्मक काम्य होती है. हमसे आशा की जाती है कि किसी पद्धति अथवा व्यवस्था का विरोध करने के पहले हमें उसका विकल्प तैयार कर लेना चाहिए. हम यदि किसी व्यक्ति का विरोध करते हैं, तब भी यह अपेक्षा की जाती है कि हम विकल्प स्वरूप उसको ऐसा मार्ग बताएंगे, जिस पर चलकर वह अपना कल्याण कर सके.

विसंगतियों के वर्तमान युग में भी व्यक्ति से सृजनधर्मिता की अपेक्षा की जाती है. वह नव-निर्माण न करे, परन्तु इतना अवश्य करे, कि सम्पर्क में आने वाली वस्तु एवं जगह को छोड़ने के पहले उसको उस रूप की अपेक्षा अधिक अच्छा बना दे, जिस रूप में उसने उस वस्तु अथवा स्थान को प्राप्त किया था. जो व्यक्ति ऐसा नहीं करता है, वह न अपना भला कर सकता है और न समाज के किसी काम का रह जाता है. व्यर्थ की वस्तु समझकर समाज उसकी उपेक्षा कर देता है.

यह आवश्यक नहीं है कि सृजन का लक्ष्य कोई महान् कृति ही हो. हमारे सामने ऐसे उदाहरण मौजूद हैं, जब मात्र एक रचना का प्रणयन करके रचनाकार अमर हो गए हैं. हमें समझ लेना चाहिए कि हिमालय का निर्माण एक दिन में नहीं हुआ है. सृजन के एक-एक परमाणु ने युग-युगीन प्रयत्नों द्वारा इसकी पुष्टि की है.

समस्त प्राणि-जगत्–वनस्पति, जन्तु एवं मानव में दो मौलिक वृत्तियाँ (Instincts)– प्रजनन एवं आत्मरक्षा समान रूप से पाई जाती हैं. अपनी परम्परा की वृद्धि एवं उसकी सुरक्षा जीवन और जीवंतता की पहचान हैं. मनोविश्लेषण शास्त्र के अग्रणी पुरोधा सिगमण्ड फ्रायड ने तो दाम्पत्य प्रेम (Sex or Mating instinct) को जीवन की सर्वग्रासी एवं सर्वोपरि मौलिक वृत्ति मानकर प्रकारान्तर से प्रजनन को जीवन के कार्यकलापों में शीर्ष स्थान पर प्रतिष्ठित कर दिया है. यदि सृजन न हो तो समस्त वनस्पति जगत्, जीव जगत् एवं जीव निष्शेष हो जाए. इसी कारण फूल-फल प्रदान करने वाले ही लता-गुल्म प्रिय होते हैं. इस गुण से रहित होने पर उन्हें झाड़, झंकाड़, खरपतवार आदि कहकर उखाड़कर फेंक दिया जाता है.